क्या आपको पता है कि
ब्रह्माकुमार-कुमारियों तथा प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों में
क्या अंतर है?

ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ (BKs) तथा उनका ब्रह्माकुमारी विद्यालय	प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ (PBKs) तथा उनका आध्यात्मिक विद्यालय
1. निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार ममतामयी मातृ-रूप अर्थात् ब्रह्मा उर्फ दादा लेखराज को ही मान्यता देने वाले ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाते हैं।	1. निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार ममतामयी मातृ-रूप अर्थात् ब्रह्मा के साथ-साथ पितृ-रूप अर्थात् प्रजापिता या महादेव शंकर को भी मान्यता देने वाले प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाते हैं।
2. ब्रह्माकुमार-कुमारी शास्त्रों को मान्यता नहीं देते हैं।	2. प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर शास्त्रों को मान्यता देते हैं।
3. ब्रह्माकुमार-कुमारियों ने त्रिमूर्ति शिव का चित्र तो छपाया है, लेकिन निराकार शिव की तीन मूर्तियों (ब्रह्मा, शंकर और विष्णु) में से केवल तथाकथित ब्रह्मा अर्थात् दादा लेखराज का परिचय देती हैं; ब्रह्मा, विष्णु और शंकर का वास्तविक परिचय नहीं। अब तो सारी प्रचार सामग्रियों में त्रिमूर्ति शिव का भी नहीं, अपितु सिर्फ तीन दादियों के चित्र छापे जाते हैं।	3. प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा उन तीनों वर्तमान साकार व्यक्तित्वों (ब्रह्मा, शंकर और विष्णु) का परिचय दिया जाता है, जिनके द्वारा त्रिमूर्ति शिव क्रमशः नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की पालना के तीन दिव्य-कर्तव्य कराते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा किसी भी देहधारी गुरु का प्रचार-प्रसार नहीं किया जाता है।
4. ब्रह्माकुमार-कुमारी ज्ञान-योग का विज्ञापन करते हैं, जैसे प्रदर्शनी, सम्मेलन, मेले, यात्राएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि।	4. प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी किसी प्रकार के विज्ञापन में विश्वास नहीं रखते।
5. ब्रह्माकुमार-कुमारी समझते हैं कि वे इस जन्म में पुरुषार्थ कर, मृत्यु के बाद देवता बनेंगे, जबकि उनके द्वारा प्रकाशित ज्ञान मुरलियों में भगवान शिव ने यह कहा है कि भगवान के बच्चे इन आँखों से स्वर्ग देखेंगे।	5. प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी मानते हैं कि परमपिता शिव द्वारा एक साधारण मनुष्य तन के माध्यम से वर्तमान समय सिखाए जा रहे सहज राजयोग द्वारा इसी जन्म में मनुष्य से देवता बना जा सकता है, जैसा कि गीता में भी उल्लिखित है।
6. ब्रह्माकुमार-कुमारी (विशेषकर आश्रमवासी)	6. प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी रहन-सहन,

आलीशान भवनों, आराम के साधनों, विभिन्न प्रकार के व्यंजनों, श्वेत वस्त्रों इत्यादि के आदी हो गए हैं, जबकि वे दुनिया को विनाश की चेतावनी देते हैं।	खान-पान, पहनावे में सादगी को ही श्रेष्ठ मानते हैं, क्योंकि त्रिमूर्ति शिव का कहना है कि इस कलियुगी पतित सृष्टि का शीघ्र ही अंत होने वाला है।
7. ब्रह्माकुमारी संस्था में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चंदा माँगा जाता है, जो कि ज्ञान मुरलियों में दी गई ईश्वरीय श्रीमत के विरुद्ध है।	7. प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी किसी भी प्रकार का चंदा माँगने से मरना भला समझते हैं।
8. ब्रह्माकुमार-कुमारी कहने को तो एक धर्म, एक राज्य, एक मत की बात करते हैं, लेकिन उनके व्यवहार में विरोधाभास झलकता है।	8. प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी प्रैक्टिकल में आए हुए एकमात्र ईश्वर की ही श्रेष्ठ मत को मानते हुए, उस पर चलने का प्रयास करते हैं।
9. समर्पित ब्रह्माकुमार-कुमारी आश्रमों में सन्यासियों की तरह रहते हैं।	9. समर्पित और गैर-समर्पित प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी गृहस्थी जीवनयापन करते हैं।

त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाचः

''बेहद का बाप, ज्ञान का सागर, पतित-पावन, सद्गति दाता, गीता का भगवान शिव कैसे (प्रजापिता) ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा फिर से कलियुगी, सम्पूर्ण विकारी, भ्रष्टाचारी, पतित दुनिया को सतयुगी, सम्पूर्ण निर्विकारी, पावन, श्रेष्ठाचारी दुनिया बना रहे हैं- वह खुशखबरी आकर सुनो अथवा समझो।'' - ज्ञान मुरली दिनाँक 02.03.76 पृ.1 म.

विश्व नवनिर्माण की अनूठी ईश्वरीय योजना के बारे में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय

मकान नं.351/352, ब्लॉक-ए, फेस-1, विजयविहार,
रिठाला, रोहिणी के सैक्टर-5 के पास
दिल्ली-110085, फोन नं. 011-27044227, 9891370007

स्थानीय पता